P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

बी0 एड0 शिक्षकों एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0) के आत्म प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन

राम प्रकाश सैनी
सहायक आचार्य,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय,
कानपुर

सारांश

आज देश प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी से जूझ रहा है। प्रशिक्षित अध्यापकों की भूमिका जहाँ आज हर तरफ महसूस की जा रही है वहीं आज भी देश में बहुत बड़ी संख्या में अप्रशिक्षित शिक्षक शिक्षण कार्य कर रहे हैं। खास तौर पर उच्च शिक्षा में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को छोड़कर समस्त संस्थानों में अप्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा ही शिक्षण कार्य किया जाता है। ऐसा मान लिया जाता है कि उन्होंने नेट/पी0एच–डी0 का प्रमाण पत्र प्राप्त कर लिया है, इसलिए उनके पास शिक्षक के समस्त गुण पैदा हो चुके हैं। यदि ऐसा होता तो किसी को किसी भी क्षेत्र में प्रशिक्षण की आवश्यकता न होती। ऐसा माना जाता है कि प्रशिक्षित शिक्षक का आत्म प्रत्यय अप्रशिक्षित शिक्षक की अपेक्षा ज्यादा विकसित होता है। शोधकर्ता को अपने शोध में यह विचारधारा सच साबित हुई कि वास्तव में बी0 एड0 प्रशिक्षित शिक्षकों की अपेक्षा अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों का आत्म प्रत्यय निम्न स्तर का होता है। आज यह महसूस किया जा रहा है कि अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों की भी शिक्षक का प्रशिक्षण प्रदान किया जाये जिससे वे अपने आत्म प्रत्यय को विकसित कर सकें। शिक्षक का आत्म विश्वास छात्र की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसलिए समाज और सरकार को इस दिशा की आगे बढ़ना चाहिए। शिक्षाशास्त्रियों एवं समाजशास्त्रियों को देश हित में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी चाहिए।

मुख्य शब्द : बी0एड0 शिक्षक, अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षक (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0) एवं आत्म प्रत्यय।

प्रस्तावना

अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली हैं। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से उसे सींचकर शक्तियों को निर्मित करते हैं। जिस प्रकार माली अपनी चातुर्यता से पौधे की जरूरत को समझकर उसे उसकी आवश्यकतानुसार पोषण देकर सुरक्षित एवं संरक्षित करता है, उसी प्रकार सफल शिक्षक अपने छात्र की आवश्यकता को समझकर उसे पोषित एवं पल्लवित करता है जिससे छात्र एक योग्य नागरिक बनकर देश की प्रगति में अपना योगदान दे सकें।

संतवाणी संग्रह में यह दर्शाया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी सहारे की आवश्यकता होती है वह किसी अनुभवयुक्त ज्ञानी व्यक्ति की अंगुली पकड़कर अपना मार्ग तय करना चाहता है। इस संसार में दूध पिलाने वाले तो बहुत हैं परन्तु उसके विष को पीने वाले अल्प ही दिखायी पड़ते हैं। आज इस समाज में ऐसा व्यक्ति अध्यापक ही दिखायी पड़ता है समाज की समस्त बुराईयों से वाकिफ है और उन्हें दूर करने हर सम्भव प्रयास करता है। इसीलिए एक अध्यापक को अपना आत्म प्रत्यय इतना प्रभावशाली बनाना चाहिए जिससे शिष्यों में ऐसे गुणों का विकास हो सके जिसके द्वारा वे समाज को सूर्य के प्रकाश सा प्रकाशवान कर सकें।

राष्ट्र का सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व नैतिक विकास एवं समृद्धि तभी सम्भव है जब देश के अध्यापक कर्तव्यनिष्ठ, योग्य, कार्यकुशल एवं विश्वसनीय आदि गुणों से पूर्ण हों। इन गुणों का समुचित रूप से विकास अध्यापकों में प्रशिक्षण द्वारा ही सम्भव है। ऐसा माना जाता है कि एक बी0 एड0 अध्यापक में ऐसे गुण विद्यमान होते है क्योंकि प्रशिक्षण के दौरान उनमें यही सारे गुण विकसित किये जाते हैं। इन्हीं गुणों के कारण प्रशिक्षित अध्यापक अपनी कक्षा में ऐसा वातावरण निर्माण करने में सफल हो पाता है कि उसके छात्र कुशलता के साथ अपना अध्ययन कार्य पूर्ण कर सकें, जबकि अन्य स्नातक

स्तरीय शिक्षक अत्यधिक ज्ञान होने के बाद भी अपने ज्ञान को पूर्णतया छात्रों के सम्मुख व्यक्त नहीं कर पाते हैं क्योंकि आत्म प्रत्यय को छात्रों तक पहुँचाना भी कला है जो अनुभव एवं प्रशिक्षण के द्वारा अपने अन्दर विकसित की जा सकती है।

समस्या की उत्पत्ति

वर्तमान समय में स्नातक पूर्व शिक्षा में शिक्षण हेतु शिक्षक प्रशिक्षण में डिग्री या डिप्लोमा की अनिवार्य आवश्यकता है परन्तु स्नातक स्तर के उपरान्त शिक्षण के लिए किसी भी प्रकार की प्रशिक्षण डिग्री की आवश्यकता नहीं होती है। उसके लिए केवल नेट/पी0एच–डी के प्रमाण पत्र की आवश्यकता होती है। कई बार ऐसी माँग उठ चुकी है कि स्नातक स्तरीय शिक्षा के लिए भी प्रशिक्षण की अनिवार्यता होनी चाहिए इसीलिए शोधकर्ता के मन में यह जिज्ञासा हुई कि बी0 एड0 स्तर पर अध्यापनरत और स्नातक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों के आत्म प्रत्यय में कोई अन्तर प्रतीत होता है? इसीलिए शोधकर्ता ने निम्न विषय को शोध हेतु चुना है–

समस्या कथन

बी0एड0 शिक्षकों एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षक के मध्य आत्म प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन में प्रयुक्त चरों का परिभाषीकरण

बी0 एड0 शिक्षक

बी0 एड0 शिक्षकों से तात्पर्य उन शिक्षकों से है जो वर्तमान में सरकारी एव गैर सरकारी बी0 एड0 महाविद्यालयों में अध्यापनरत हैं।

अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षक

अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों से तात्पर्य उन शिक्षकों से है जो महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में स्नातक स्तर (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0) आादि पर अध्यापनरत हैं।

आत्म–प्रत्यय

आत्म–प्रत्यय वह सामान्य पद है, जिसका अर्थ है व्यक्ति के गुणों और व्यवहार आदि के सम्बन्ध में उसका मत एवं व्यक्ति अपने गुणों और व्यवहार आदि के सम्बन्ध में जो मत रखता है, वही उसका आत्मप्रत्यय है। प्रत्येक व्यक्ति का आत्मप्रत्यय उसके विचारों पर आधारित होता है तथा उस व्यक्ति के लिए आत्मप्रत्यय बहुत महत्वपूर्ण होता है। आत्मप्रत्यय व्यक्ति का केन्द्र बिन्दु है।

"व्यक्ति की तुलना साइकिल के पहिए से करें तो कहा जा सकता है कि साइकिल के पहिए में लगा हुआ हब आत्मप्रत्यय है तथा हब से जुड़ी हुई तीलियॉ व्यक्तित्व के विभिन्न लक्षण या शील गुण हैं।"

Kettle, 1957

शोध के उद्देश्य

1. बी0एड0 शिक्षकों के आत्म–प्रत्यय का अध्ययन करना।
2. अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0) के आत्म प्रत्यय का अध्ययन करना।
3. बी0एड0 एवं अन्य स्नातक स्तरीय (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0) शिक्षकों के मध्य आत्म–प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

1. बी0एड0 शिक्षकों के मध्य आत्म–प्रत्यय का स्तर सामान्य होता है
2. अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0) के आत्म प्रत्यय का स्तर सामान्य होता है।
3. बी0एड0 एवं अन्य स्नातक स्तरीय (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0) शिक्षकों के मध्य आत्म–प्रत्यय में सार्थक अन्तर होता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

प्राचीन समय में ऐसा माना जाता है कि शिक्षक जन्मजात होते थे लेकिन मनोविज्ञान के उदय के साथ एक बात स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ती है कि उन शिक्षकों में भी कहीं न कहीं कुछ कमियाँ थीं। उस समय शिक्षा शिक्षक प्रधान थी परन्तु आज यह छात्र प्रधान हो गयी है और ऐसा माना जाना लगा है कि यदि हम छात्र की प्रतिभाओं का सर्वोत्तम उपयोग करना चाहते है तो हमें छात्र को समझना होगा। उसकी योग्यताओं और क्षमताओं को ध्यान में रखना होगा, यही मान कर शिक्षण पूर्व प्रशिक्षण की व्यवस्था प्रारम्भ की गयी। आज कहीं न कहीं यह माँग की जा रही है कि प्रत्येक स्तर पर शिक्षण पूर्व प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए जिससे शिक्षक छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण प्रक्रिया को सुनिश्चित करने की तरफ आगे बढ़ सकें और युवा क्षमताओं का सही प्रयोग देश हित में किया जा सके।

शोध का सीमांकन

1. प्रस्तुत शोध छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर तक सीमित है।
2. इसमें केवल बी0 एड0 एवं अन्य स्नातक स्तर के शिक्षकों को ही अध्ययन में शामिल किया गया है।
3. अन्य स्नातक स्तर तृतीय वर्ष में अध्यापनरत शिक्षकों को ही शामिल किया गया है।
4. इसमें केवल कानपुर जिले के शहरी क्षेत्र को ही शामिल किया गया है।

साहित्यावलोकन

शोधकर्ता के शोध से सम्बन्धित क्षेत्र में अभी तक जो कार्य हुए है उनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं–

1. सक्सेना, किरन (2010) बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झॉसी ने माध्यमिक स्तर पर छात्र– छात्राओं के आत्म प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि छात्र–छात्राओं के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. बिन्नी, रमा (2011) बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झॉसी ने माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि विद्यार्थियों का आत्म प्रत्यय उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव डालता है।
3. तिवारी सरिता (2012) ज्यातिबाराव फूले विश्वविद्यालय, बरेली ने उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी और गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा

गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का आत्म प्रत्यय उच्च स्तर का पाया गया।

4. चौहान, सुधीर (2013) छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर ने विद्यालय वातावरण का छात्रों के आत्म प्रत्यय पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि विद्यालय वातावरण छात्रों के आत्म प्रत्यय पर सार्थक प्रभाव डालता है।
5. सिंह, विजय प्रताप (2014) छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर ने छात्रों के पारिवारिक सामाजिक आर्थिक स्तर का उनके आत्म प्रत्यय और चिन्ता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि पारिवारिक सामाजिक आर्थिक स्तर छात्रों के आत्म प्रत्यय और चिन्ता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।
6. कनौजिया, विमल कुमार (2015) छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर ने यू0 पी0 बोर्ड और सी0बी0एस0ई0 बोर्ड में अध्ययनरत छात्रों की अधिगम शैलियों का उनके आत्म प्रत्यय पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि यू0 पी0 बोर्ड की अपेक्षा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों की अधिगम शैली का उनके आत्म प्रत्यय पर ज्यादा अधिक सार्थक प्रभाव पाया गया।
7. राधा कृष्ण और साधना मित्तल (2016) डा0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा ने किशोरावस्था के अनुसूचित जाति और जन–जाति के छात्रों के आत्म प्रत्यय और शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि दोनों प्रकार के छात्रों के आत्म प्रत्यय और शैक्षिक उपलब्धि में काफी अन्तर था और अनुसूचित जाति के छात्र अनुसूचित जनजाति के छात्रों की अपेक्षा अपने को श्रेष्ठ मानते थे।
8. प्रीति रानी (2017) छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर ने बी0टी0सी0 और विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों के आत्म प्रत्यय और सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि बी0टी0सी0 और विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों के आत्म प्रत्यय और सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं था।

शोधकर्ता के शोध के क्षेत्र में हुए कार्यों के अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अभी तक जितने भी शोध हुए हैं उनमें विशेष रूप से शैक्षिक उपलब्धि और आत्म प्रत्यय, समायोजन का आत्म प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन, छात्र एवं छात्राओं के आत्म प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन आदि अन्य विषयों के साथ आत्म प्रत्यय को लेकर तो शोध कार्य हुए हैं लेकिन बी0 एड0 एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों की आत्म प्रत्यय को लेकर अभी तक कोई काम नहीं हुआ है जबकि विद्यार्थियों में आत्म प्रत्यय विकसित करने के उद्देश्य से शिक्षकों में आत्म प्रत्यय विकसित होना आवश्यक है। इसीलिए इस विषय पर शोध करना आवश्यक है।

शोध प्रारूप

शोध विधि

प्रस्तुत शोध हेतु वर्णात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

शोध हेतु जनसंख्या के रूप में छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से सम्बद्ध शहरी क्षेत्र के समस्त बी0 एड0 एवं स्नातक स्तर के समस्त महाविद्यालयों को शामिल किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श के रूप में 5 बी0 एड0 महाविद्यालयों तथा 5 अन्य स्नातक स्तरीय महाविद्यालयों से 50–50 शिक्षकों को यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया है।

शोध उपकरण

शोध की पूर्णता हेतु उपकरण के रूप में डा0 मुक्तारानी रस्तोगी, मनोविज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ द्वारा निर्मित आत्म प्रत्यय स्केल का प्रयोग किया गया है।

सांख्यकीय विधि

शोध उपकरण से प्राप्त आंकड़ों की प्रकृति को देखते हुए शोध हेतु निम्न विधियों का प्रयोग किया गया है– जिसका सूत्र निम्नवत् है–

$$x^2 = \sum \left\{ \frac{(fo-fe)2}{fe} \right\}$$

fo = Observed frequency
fe = Expected frequency

$$C.R. = \frac{M1-M2}{\sigma d}$$

M1= Mean of Ist Group
M2= Mean of IInd Group

$$\sigma d = \sqrt{\frac{\sigma_1^{1}}{N_1} + \frac{\sigma_2^{2}}{N_2}}$$

आंकड़ों का विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं का परिक्षण

बी0 एड0 शिक्षकों का आत्म प्रत्यय का स्तर सामान्य होता है

शून्य परिकल्पना

बी0 एड0 शिक्षकों के आत्म प्रत्यय का स्तर सामान्य नहीं होता है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

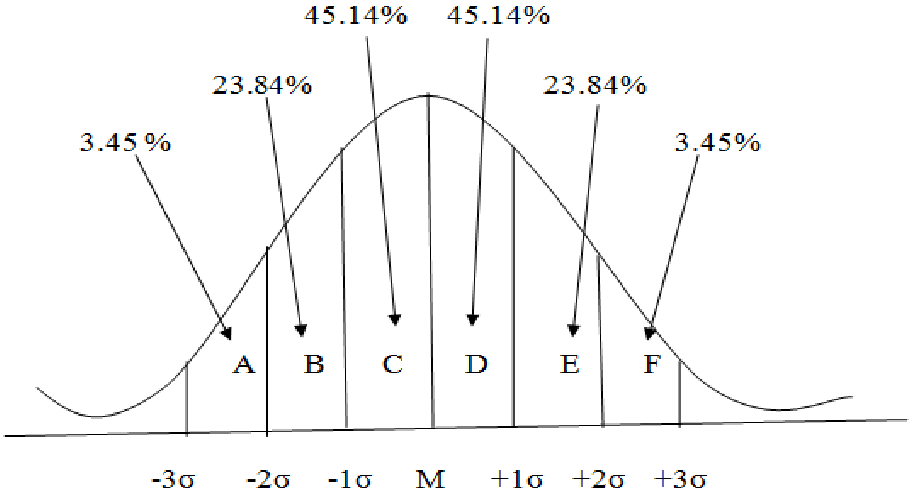

(NPC)

तालिका नं0 –1

आत्म प्रत्यय	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत	योग
Fo	4	11	14	15	6	50
Fe	2	12	22	12	2	50
x^2	16.16					

df= 4
table value = at.05 level =9.488

परिगणित का मान 16.16 जो दी गयी तालिका मान 9.488 से अधिक है इसलिए यहाँ पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है और शोध की परिकल्पना को स्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि बी0 एड0 महाविद्यालयों के शिक्षकों के आत्म प्रत्यय का स्तर सामान्य होता है।

अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) का आत्म प्रत्यय का स्तर सामान्य होता है।

शून्य परिकल्पना

अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) का आत्म प्रत्यय का स्तर सामान्य नहीं होता है।

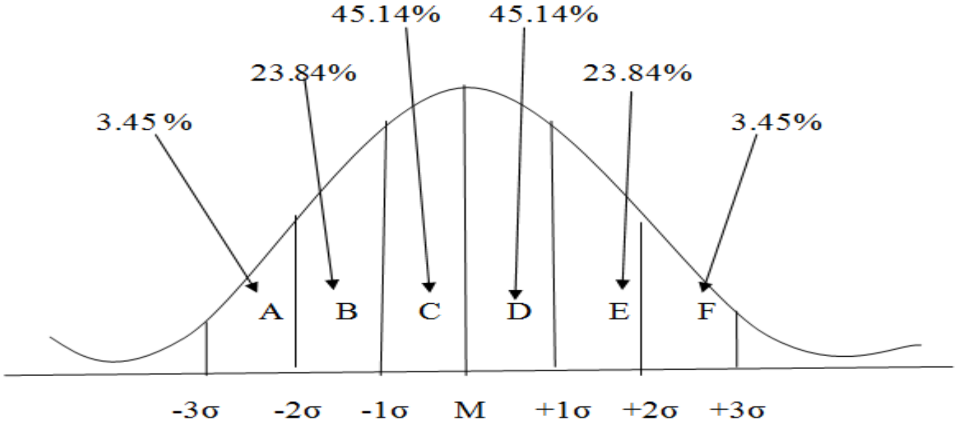

(NPC)

तालिका नं0 –2

आत्म प्रत्यय	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत	योग
Fo	5	10	17	11	7	50
Fe	2	12	22	12	2	50
x^2	18.75					

df= 4
table value = at.05 level =9.488

परिगणित का मान 18.75 जो दी गयी तालिका मान 9.488 से अधिक है। इसलिए यहाँ पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है और शोध की परिकल्पना

को स्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि बी0 एड0 महाविद्यालयों के शिक्षकों के आत्म प्रत्यय का स्तर सामान्य होता है।

बी0एड0 शिक्षकों एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) के मध्य आत्म प्रत्यय को अध्ययन करना।

शून्य परिकल्पना

बी0एड0 शिक्षकों एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) के मध्य आत्म प्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तलिका संख्या–3

आत्म प्रत्यय	शिक्षकों की संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
बी0एड0 शिक्षक	50	162.50	16.2	**5.87**
अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षक	50	157.22	38.27	

df = 98
C.R. Value at .05%= 1.98

यहाँ पर परिगणित क्रान्तिक अनुपात का मान 5.87 जो कि दी क्रान्तिक अनुपात की तालिका के .05 % पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.98 से बहुत ज्यादा है। इसलिए यहाँ पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा शोध की परिकल्पना स्वीकृत होती है और यह कहा जा सकता है कि बी0 एड0 शिक्षकों और अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों के आत्म प्रत्यय में सार्थक अन्तर होता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

निष्कर्षों की व्याख्या

1. बी0 एड0 महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के आत्म प्रत्यय का वितरण सामान्य स्तर होने का कारण शायद यह हो सकता है कि उत्तर प्रदेश में संचालित बी0 एड0 एवं एम0 एड0 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थितियाँ लगभग एक सी ही हैं इसलिए ऐसे प्रशिक्षण संस्थानों से प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का आत्म प्रत्यय लगभग समान ही होता है।
2. अन्य स्नातक स्तरीय (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों में भी आत्म प्रत्यय का वितरण सामान्य पाये जाने का कारण शायद यह हो सकता है कि उत्तर प्रदेश में (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता और कार्य तथा स्थान की परिस्थितयॉ लगभग समान ही होती हैं अतः उनके आत्म प्रत्यय में सामान्य वितरण होना स्वाभाविक प्रतीत होता है।
3. बी0 एड0 एवं अन्य स्नातक स्तरीय (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) शिक्षकों के आत्म प्रत्यय में सार्थक अन्तर होने का कारण शायद यह हो सकता है कि बी0 एड0 स्तर पर अध्ययनरत शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त होते हैं और प्रशिक्षण के माध्यम से उनके अन्दर छिपी हुई प्रतिभाओं को विकसित करने का प्रयास किया जाता है जिसके कारण उनके अन्दर आत्म प्रत्यय का गुण अधिक विकसित होता है जबकि बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0 स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों को इस प्रकार का कोई प्रशिक्षण प्राप्त नहीं होता है इसलिए दोनों प्रकार के शिक्षकों के आत्म प्रत्यय में अन्तर होना सही प्रतीत होता है।

सुझाव

1. अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) में आत्म प्रत्यय विकसित करने हेतु प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी आवश्यक है।
2. बी0 एड0 एवं अन्य स्नातक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों में बेहतर आत्म प्रत्यय विकसित करने के उद्देश्य से समय–समय पर प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।
3. दोनों प्रकार के शिक्षकों को अपने अन्दर आत्म प्रत्यय विकसित करने के उद्देश्य से नित नयी चीजों के प्रति जिज्ञासु प्रवृति का होना चाहिए।
4. महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर उच्च स्तर के पुस्तकालय की सुविधा दोनों प्रकार के शिक्षकों के लिये उपलब्ध होनी चाहिए।
5. इस प्रकार की कार्यशालाओं का आयोजन समय–समय पर होना चाहिए जिनसे शिक्षकों का आत्म प्रत्यय विकसित हो।
6. शिक्षकों को नई–नई समस्याओं पर अपने विचार देने चाहिए जिससे उनके आत्म प्रत्यय के विकसित होने में मदद हो सके।
7. स्नातक स्तरीय शिक्षकों को शिक्षण करते समय विशिष्ट शिक्षण युक्तियों का प्रयोग करना चाहिए।
8. शिक्षकों को शिक्षण के दौरान विभिन्न प्रकार के शिक्षण आव्यूहों का प्रयोग करना चाहिए ऐसा करने से उनके आत्म प्रत्यय का विकास होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *श्रीवास्तव, डी0 एन0 एवं प्रीति वर्माः व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा– 2015*
2. *कपिल, एच0 के0ः अनुसंधान विधियॉ, एच0 भार्गव बुक हाउस, 4/230 कचहरी घाट, आगरा– 2013*
3. *भार्गव, महेशः आधुनिक मनोविज्ञान, एच0 भार्गव बुक हाउस, 4/230 कचहरी घाट, आगरा– 2012*
4. *मंगल, एस0 के0ः शिक्षा मनोविज्ञान, पी0 एच0 आई0 लर्निंग प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली– 2011*
5. *शर्मा, आर0 ए0ः शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रकिया, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ–2015*
6. *भारतीय आधुनिक शिक्षाः वर्ष–27, अंक–2, एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, नई दिल्ली, अक्टूबर–2004*
7. *भारतीय आधुनिक शिक्षाः वर्ष–30, अंक–3, एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, नई दिल्ली, ISSN No. 0972-5636 अक्टूबर–2010*
8. *BRICS Journal of Educational Research, Vo. 01, Issue-3 & 4 ISSN No- 2231-5629, Maharshi Markandeshwar University, Ambala, July-2011*
9. *International Journal of Education & Allied Science, Vo. 01, No. 8, ISSN No. 0975-9680, A.A.C.C. Society, Meerut- July to December 2015*